P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

त्रिदेवों का सार्वभौमत्व

सारांश

भगवान् विष्णु के विभिन्न रूपों के वर्णन में पराषर मुनि ने विष्णु चित और श्रीधरी टीका में उनकी विस्तृत व्याख्या की है।

विष्णु ही नारायण के रूप में ब्रह्मा, स्वयं विष्णु और रुद्र यानि शिव के ही कार्य प्रदर्शित किये है। जिनमें सृष्टि निर्माण, पालन और सृष्टि का संहार तीनों ही विष्णु के रूप में ही अपने कार्यों का सम्पादन करते है।

काल स्वरूप से जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और उसका संहार करने की तीनों शक्तियां भगवान् विष्णु में निहित है।

मुख्य शब्द : त्रिदेव, ब्रह्म, प्रकृति।

संध्या दावरे
शोधार्थी,
संस्कृत विभाग,
विक्रम विश्वविद्यालय,
उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

ब्रह्म ही सर्वोवरि हिरण्गर्भा और पुरुष के रूप में ईश्वर यानि वही सम्पूर्ण जगत् का रचयिता है। ब्रह्म ही प्रजा की उत्पत्ति करने वाले है। यह प्रकृति ही संसार की योनि है अर्थात् प्राणी की उत्पत्ति का मूल आधार है। इस प्रकृति से ही समस्त संसार की उत्पत्ति हुई है।

"जगद्योनिम्महाभूतं परंब्रह्म सनातन्'।
विगहं सर्वभूताना' व्यक्त भवत्किल।।"

अर्थात् जो प्रकृति पर ब्रह्म और बहुत प्राचीन है तथा अव्यक्त होते हुए भी निश्चित ही पंचभूतवालों का शरीर है।

इसलिए प्रकृति अनादि अजन्मा और सूक्ष्म है। वही सत्व, रज, तम' सभी पंचभूत निर्मित शरीर है। इस प्रकार ब्रह्म ही वह सर्वोपरि तत्व है जो सत्व, रज और तमों गुणों के विकारों के कारण ही विभिन्न सृष्टि के जीवों निर्माता है।

"आदिकर्ता स भूतानां ब्रह्माग्रें समवर्तिना'।।"

वह पुरुष ही ब्रह्मा के आगे सम्वर्तमान भूतों याने आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी का आदिकर्ता है।

सत्त्वगुण की वृद्धि होने पर ही वनस्पति की उत्पत्ति होती है। इसी प्रकार सत्त्वगुण और तमो गुण से "सत्त्वं विष्णू रजो ब्रह्मा तमो रुद्रः प्रजापतिः।।

सत्त्वगुण के कारण विष्णु सृष्टि पालनकर्ता के रूप में, रजो गुणों के प्रभाव से सृष्टि की उत्पत्ति के कारण बने हैं और तमोगुण के प्रभाव में रुद्र यानि शिव को संहारकर्ता के रूप में अपने कार्यों का सम्पादन करते हैं।

"एत एव त्रयो लोका एत एव त्रयो गुणाः।
परस्परान्वा ह्येते परस्वर'नुव'ताः।।
परस्परेण वर्तते प्रेरन्ति परस्पर्'।।"

अर्थात्– ये ही तीनों लोक हैं, ये ही तीन गुण हैं। ये तीनों गुण सत्त्व, रज और तम या फिर विष्णु, ब्रह्मा और रुद्र परस्पर अन्व है अर्थात् एक दूसरे के अनुगामी हैं। वे एक दूसरे के व्रत, नियम का पालन करने वाले हैं। एक दूसरे के साथ रहते हैं, और एक दूसरे को प्रेरित करते हैं।

संक्षेपतः ही कहा जा सकता है कि ब्रह्मत्व की अवस्था में वे स्वंभू लोकों की रचना करते हैं, लोकों को उत्पन्न करते हैं और प्रलयकाल आने पर सम्क् प्रकार से सब कुछ विनष्ट कर देते हैं।

नारायण का अर्थ– नार + अयन। नार को जल कहते हैं और अयन का अर्थ स्थान। विष्णु ही नारायण है। अर्थात् जल ही उनका स्थान है। वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाये तो जीव की उत्पत्ति जल से हुई है।

लेकिन ब्रह्माण्ड पुराण में ही स्वंभू विष्णु ही आत्मा को तीन प्रकार से विभक्त कर संसार के जीवों को उत्पन्न करते हैं, ग्रसते और पालन करते हैं।

"नारायणां स्वापनं ब्रह्मा तस्मान्नाराः स्मृतः।
त्रिधा विभज्य चात्मानं सकल सं प्रवर्त्तते।।
सृजते ग्रसते चैव पाल्ते च त्रिभिः स्वयम्'।
सोऽग्रे हिरण्गर्भः सन् प्रादूर्भूतःस्वं प्रभुः।।"

वे स्वयं विष्णु इस आत्मा को तीन प्रकार से विभक्त कर समस्त कलाओं में प्रवृत्त होते हैं और फिर वे ही संसार को या जीव को उत्पन्न करते हैं। ग्रसते और पालन करते हैं। ये तीनों कार्य वे प्रभु स्वयं ही करते है। वहीं प्रभु आगे चलकर स्वयं हिरण्य गर्भ के रूप में प्रकट हुए हैं।

किन्तु ब्रह्माण्ड पुराण के पाँचवें अध्याय में लोगों की प्रकल्पना कर के विश्वकर्मा ने प्रजा की रचना की। देखिए–

"ब्रह्मा स्वंभूर्भगवान् सिसृक्षुर्विधाः प्रजाः।।"

उस समय' स्वंभू भगवान् ब्रह्मा ने अनेक प्रकार की रचना कर दी।

ब्रह्मा ने ही पंचमहाभूतों और स्थावर जंगम' आदि जीवों को उत्पन्न किया।

"पुनः सृजति भूतादि चराणि स्थावराणि च।
क्षान्पिचाचान् गन्धर्वान्सवशोऽप्सरस्तथा।।"

फिर ब्रह्मा ने पञ्चमहाभूतों आकाश, वायु, अग्नि, जल, और पृथ्वी को तथा चर जीवों, अचर पर्वतों, यक्ष, पिशाचों, गन्धर्वों और अनन्य स्थानों पर अप्सराओं को पैदा किया।

विष्णु पुराण में विष्णु का ही वर्चस्व सर्वत्र परिलक्षित हुआ है। विष्णु ही ब्रह्मा होकर रजोगुण से संसार की रचना में प्रवृत्त होते हैं। यथा–

"जुषन् रजो गुणं तत्र स्वं विश्वेश्वरो हरिः।
ब्रह्मा भूत्त्वास्य जगतो विसृष्टौ सम्प्रर्तते।।"

स्वं विश्वेश्वर भगवान् विष्णु ब्रह्मा होकर रजोगुण का आश्रय लेकर संसार की रचना में प्रवृत्त होते हैं।

"सृष्टं च पात्यनुगं यावत्कल्प विकल्पना।
सत्त्वभूद्भगवाविष्णुरप्रमेय पराक्रम''।।
तमोद्रेकी च कल्पाते रुद्ररूपी जनार्दनः।
मैत्रेयाखिल भूतानि भक्षतदिदारुणः।
भक्षत्विा च भूतानि जगत्येकार्णवीकृते।
नागपक्शने शेते च परमेश्वरः।।"

तथा रचना हो जाने पर सत्त्वगुण विशिष्ट अतुल पराक्रमी भगवान् विष्णु उसका कल्प का अन्त होने पर अति दारुण समस्त भूतों का भक्षण कर लेते हैं। इस प्रकार समस्त भूतों का भक्षण कर संसार को जलमय कर के वे विष्णु भगवान् शेषशय्या पर शयन करते हैं।

जगने पर विष्णु भगवान् ब्रह्मारूप में फिर जगत् की रचना करने लगते हैं।

"प्रबुद्धश्य पुनः सृष्टिं करोति ब्रह्मरूपधृक्।।"
"सृष्टा सृजति चात्मा नं विष्णुः पाल्यं च पाति च।
उपसंहिते चान्ते संहर्ता च स्वं प्रभुः।।"

वे प्रभु विष्णु ह्रष्टा (ब्रह्मा) होकर अपनी ही सृष्टि करते हैं, और पालक विष्णु होकर पाल्यरूप अपना ही पालन करते हैं। और अन्त में स्वयं ही संहारक (शिव) तथा स्वयं ही लीन होते हैं।

"कर्तारं जगतां साक्षात्प्रकृतेश्च प्रवर्तक'।
सनातनमजं विष्णुं विरिञ्चिं विष्णुसम्भव'।।"

शिव. 7.29

साक्षात् जगत् के कर्ता, प्रकृति के प्रवर्तक, सनातन, अजविञ्चि, विष्णु से उत्पन्न है।

विष्णुरुवाच

"कर्ता हर्ता व भर्ता च मास्ति समो विभु.।
अहमेव परं ब्रह्म परं तत्त्वं पितामह!।।"

सृष्टिकर्ता, उसका पालनकर्ता तथा उसका विनाशक मेरे समान दूसरा कोई नहीं है। हे पितामह! मैं ही परब्रह्म तथा परम तत्त्व हूँ।

शिवपुराण में शिव की महता प्रतिपादित करते हुए उन्हें ही सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और सहारकर्ता के रूप में व्यक्त किया है। यथा–

श्रीमहेश उवाच

"प्रलस्थितसर्गाणां कर्ता हं सगुणोऽगुणः।
परब्रह्मा निर्विकारी सच्चिदानन्दलक्षणः।।
त्रिधा भिन्नो ह्यहं विष्णो! ब'ह्मविष्णुहराख्या।
सर्गरक्षालगुणैर्निष्कलोऽहं सदा हरे!"

शिवजी ने कहा– मैं निर्गुण या सगुण होकर भी सृजन, पालन, और संहारकर्ता हूँ। मैं ही निर्विकारी, सच्चिदानं लक्षण वाला परब्रह्म मैं ही हूँ।

शिवपुराण के उक्त श्लोक से शिव का वर्चस्व स्थापित किया गया है।

"वामाङ्गजो " हरिर्दक्षिणा'नेद्भवो विधिः।।"

शिवजी बोले मेरे बाँया अंग से विष्णु और दाहिने अंग से ब्रह्मा उत्पन्न हुए।

"महांमाङ्गहा प्रलकृदुद्रो विश्वात्मा हृदोद्भवः।
त्रिधा भिन्नो ह्यहं विष्णो! ब्रह्म विष्णु भवाख्या।।"

'महाप्रलयो करने वाले विश्वात्मा रुद्र मेरे हृद से पैदा हुए हैं हे विष्णु! इस प्रकार मैं ही ब्रह्मा, विष्णु, भव नाम' से तीनों भागों में बँट गया हूँ।

"सर्गरक्षालकरस्त्रिगुणै रज आदिभिः।
गुण भिन्नः शिवः साक्षात्प्रकृतेः पुरुषात्परः।।"

सत्त्व, रज, तम' इन तीन गुणों से उत्पत्ति, पालन, विनाश करता हूँ। साक्षात् शिवजी तीनों गुणों से भिन्न और प्रकृति तथा पुरुष से परे है।

इस प्रकार उक्त त्रिदेवों के विभिन्न पुराणों में ब्रह्मा, विष्णु और शिव का अपने अपने परि सार्वभौमत्व प्रदर्शित किया गया है।

अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीन भिन्न तत्व होते हुए भी वे एक ही ब्रह्म के तीन रूप हैं जो कार्य विभाजन की दृष्टि से तीन देवों के रूप में प्रकट है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस आलेख के माध्यम से विष्णु की सार्वभौमिकता व्यक्त की गई है। ऋग्वेद में अन्य प्राकृतिक देवताओं के साथ विष्णु के अस्तित्व पर भी ऋग्वेद में विचार व्यक्त किये है, किन्तु विष्णु पुराण में उनके सर्वोपरि रूप का चित्रण करना उल्लेखनीय प्रतीत हुआ है।

निष्कर्ष

नारायण ने सत्त्व, रज और तम इस प्रकार त्रिगुणात्मक रूप के आधार पर, नारायण भगवान् ने ही ब्रह्मा, विष्णु और शिव (रुद्र) के रूप में कार्य विभाजन किया है। 'रज' के आधार पर ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया, 'सत्त्व' के आधार पर विष्णु के रूप में पालन का कार्य स्वीकार किया। तथा रुद्र याने शिव ने,'तम के आधार पर सम्पूर्ण सृष्टि का विनाश करते है। वस्तुतः ब्रह्म तो एक ही है, किन्तु क्रियाात्मक रूप से त्रिगुणात्मक के

आधार पर उन्होंने अपना अपना कार्य विभाजन किया है। इस प्रकार त्रिदेव ही सार्वभौम' रूप से ब्रह्म ही सर्वोपरि है।

अंत टिप्पणी

1. *ब्रह्माण्ड. 3.10*
2. *ब्रह्माण्ड. 3.25*
3. *ब्रह्माण्ड. 4.6*
4. *ब्रह्माण्ड 4.10*
5. *ब्रह्माण्ड. 4.27–28*
6. *ब्रह्माण्ड. 5.29*
7. *ब्रह्माण्ड. 5/90*
8. *विष्णु. 2.61*
9. *विष्णु. 3.62–64*
10. *विष्णु. 3.65*
11. *विष्णु. 3.67*
12. *शिव. 7.37*
13. *शिव. 8.27–28*
14. *शिव. 9.56*
15. *शिव. 9.57*
16. *शिव. 9.58*